सुन लो हमारी पुकार

तोड़ दो सब मंदिर,
तोड़ दो सब मस्जिदें
तोड़ दो सब चर्च और गुरूद्वारे।

रहने दो सब इंसानो को,
सिर्फ आसमान के ऊपर बैठी,
शक्ति के सहारे।

धर्म के नाम पर,
सीरिया में तुम मासूमों का करते नरसंहार,
छोटी-छोटी बच्चियों से करते बलात्कार।

धर्म के नाम पर फूंक देते तुम,
भभकती आग में,
एक दूजे की पूंजी और व्यापार।

शरम करो अब तो सब अमानुष,
दोषी नागरिक, दुनिया भर की सरकार।

बंद करो यह धर्मांधता,
बंद करो यह अत्याचार
बंद करो यह कट्टर उवाच,
बंद करो यह नंगा नाच।

सहज, सरल जीवन का अब हो रहा है अंत,
आग की लपटों में, मुरझा रहा वसंत,
मांग है समय की,
कि कानून को कर दो इतना कड़ा,
कि हर नागरिक समझे उसे,
सबसे बड़ा।

त्वरित हो न्याय की गति और प्रणाली,
बचा लो इस धरती को,
बचा लो इस प्रकृति को,
बचा लो इंसानियत की धरोहर को,
बचा लो इसे वनमाली,
सुन लो हे शक्तिशाली!

डॉ. अंशु एस. एस. कोटिया
सहायक प्रोफेसर एवं वरिष्ठ सलाहकार
जे.एन.यू. चिकित्सा विज्ञान संस्थान, जयपुर।

सजी दुनिया

कि इस दुनिया को चाँद सा सजा जाऊँ मैं,
उस दाग में भी खूबसूरती छिपा जाऊँ मैं।

ना हिन्दू की साड़ी,
ना मुस्लिम का बुर्का,
ना वो जीन्स,
ना वो डायपर होगा,
अब तो उन गुनाहगारों से पूछ एक एंटी रेप
सूट सिलवा जाऊँ मैं।

कि इस दुनिया को चाँद सा सजा जाऊँ मैं,
उस दाग में भी खूबसूरती छिपा जाऊँ मैं।

ना होगा दहेज़, ना जलना होगा,
ना होगी खुदखुशी, ना अत्याचार होगा,
अब बस इस समाज के ठेकेदारों से पूछ हर
धर्म में मुहर लगवा जाऊँ मैं।

कि इस दुनिया को चाँद सा सजा जाऊँ मैं,
उस दाग में भी खूबसूरती छिपा जाऊँ मैं।

ना तलाक-उल-बिदअत, ना तलाक-उल-हसन,
ना विवाह-विच्छेद, ना खुद को कोसना होगा,
अब बस उस शहर काज़ी से पूछ एक गुज़ारा
लगवा जाऊँ मैं।

कि इस दुनिया को चाँद सा सजा जाऊँ मैं,
उस दाग में भी खूबसूरती छिपा जाऊँ मैं।

ना कोई इंकार, ना कोई बंदिश,
ना कोई पर्दा, ना कोई कैद होगी,
अब बस उन बुद्धिमानों को बता पैरों की
बेड़ियां हटा जाऊँ मैं।

कि इस दुनिया को चाँद सा सजा जाऊँ मैं,
उस दाग में भी खूबसूरती छिपा जाऊँ मैं।

रश्मि मिश्रा
बी.एस.सी. (कम्प्यूटर साईंस)-द्वितीय वर्ष
हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।